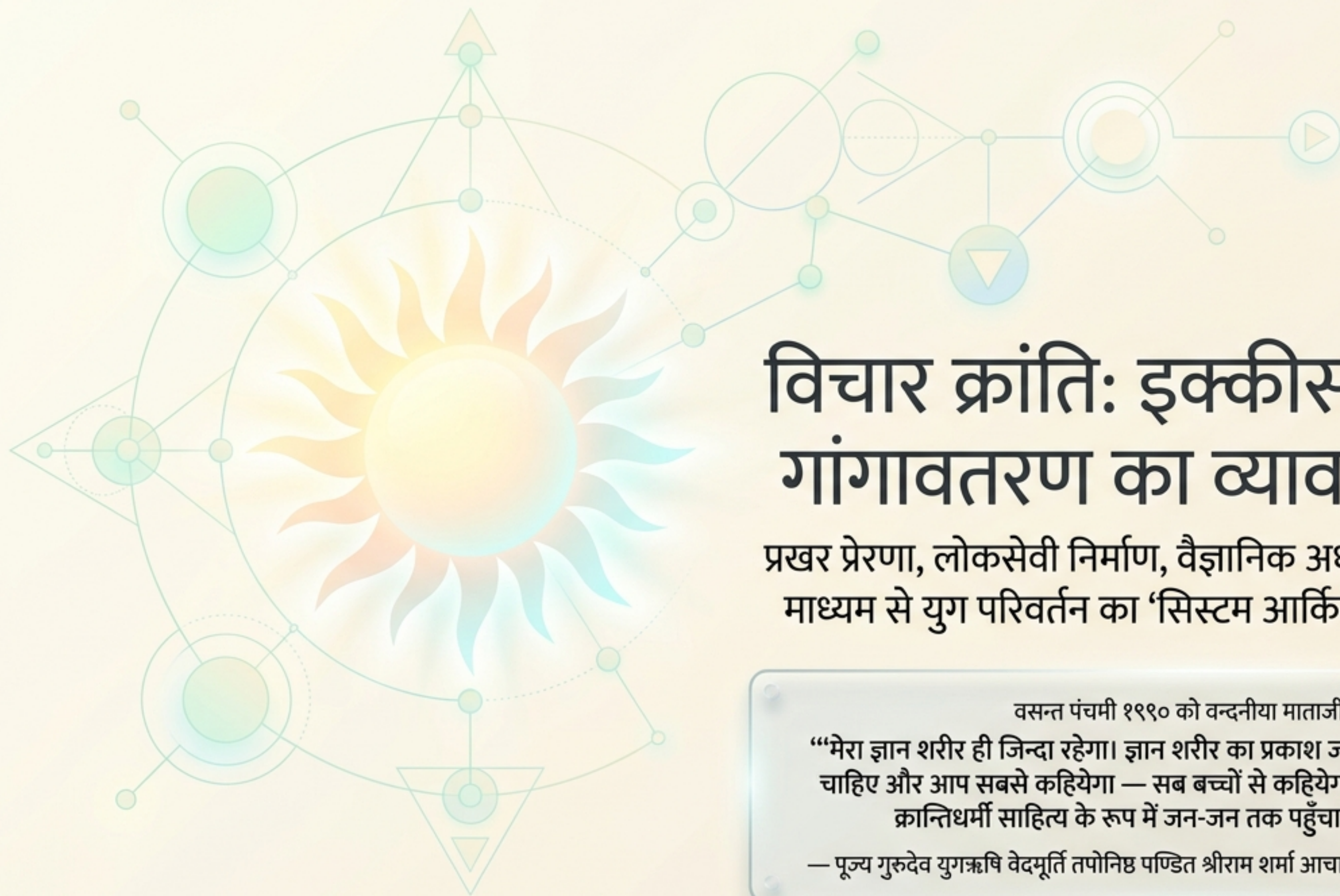




विचार क्रांति: इक्कीसवीं सदी के गांगावतरण का व्यावहारिक तंत्र

प्रखर प्रेरणा, लोकसेवी निर्माण, वैज्ञानिक अध्यात्म और दीप यज्ञों के
माध्यम से युग परिवर्तन का 'सिस्टम आर्किटेक्चर' (अध्याय 5-8)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



इन चार सुगठित तंत्रों के माध्यम से एक अभूतपूर्व
विचार क्रांति का वैज्ञानिक संचालन हो रहा है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना
आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि आप सबसे सच्च्यों से कहियेगा
मेरे क्रांतिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

स्तंभ 1: प्रखर प्रेरणा का जीवन्त तंत्र



सृजन

- 4 वेद, 108 उपनिषद, 6 दर्शन और 24 गीता का सरल हिंदी अनुवाद।
- 1500+ व्यावहारिक अध्यात्म की पुस्तकें।



वितरण

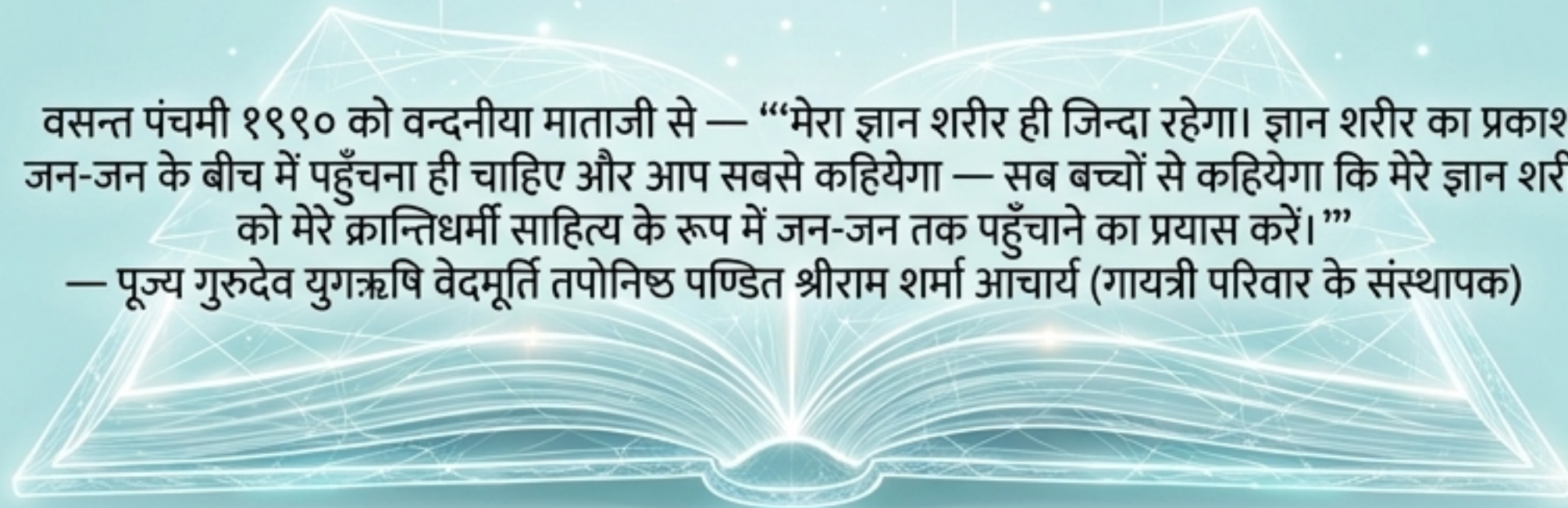
- ज्ञान-रथ और घर-घर पहुँचने वाले 'झोला पुस्तकालय'।
- लागत मूल्य (No Profit) पर सर्वसुलभ।



प्रभाव

- लाखों पाठकों के अंतःकरण को झकझोरना।
- युग समस्याओं से जूझने की प्रेरणा देना।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



विस्तार का गणित: 1 से 5 का फॉर्मूला



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

स्तंभ 2: वानप्रस्थ परम्परा का पुनर्जीवन

 प्राचीन परम्परा	 आज की स्थिति	 शांतिकुंज का समाधान
ब्राह्मण परिवारों से एक ‘परिव्राजक’, क्षत्रिय परिवारों से एक ‘सैनिक’, सिख धर्म से गुरु कार्य हेतु एक सदस्य का पूर्ण समर्पण।	अधिकांश लोग निजी स्वार्थ और वेतनभोगी व्यवस्था में उलझे हुए। आदर्शवाद के लिए निस्पृह कार्यकर्ताओं का अभाव।	○ स्वावलम्बी लोकसेवी। ○ परिवार में कुटीर उद्योग से आजीविका और शेष समय जन-कल्याण हेतु ‘समयदान’।

समानता

जाति वंश सब एक समान,
नर और नारी एक समान।

समर्पण

1500+ उच्च शिक्षित निवासी,
प्रतिदिन 10 घंटे का श्रमदान।

शांतिकुंज: व्यावहारिक साम्यवाद

आत्मनिर्भरता

कोई वेतनभोगी कर्मचारी नहीं
(सफाई, थोबी, पहरेदारी
स्वयंसेवकों द्वारा)।

मितव्ययिता

प्रतिदिन मात्र 10 पैसे के स्वैच्छिक
अंशदान से विशाल व्यवस्था का
सफल संचालन।

वसना पंचमी १९९०

को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्य रहेगा।

ज्ञान शरीर का उकारा जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा—
सब बज्जें से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को
मेरे ज्ञानिसर्मी साहित्य के रूप में जन-जन
तक पहुँचाने का प्रयास करे।”

— पुष्प मुखर्जी मुखर्जी वेदगुर्ति
तपोविष्ठ पन्थित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गांधी परिवार के संस्थापक)

स्तंभ 3: विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आधुनिक प्रयोगशाला की अनुसंधान प्रक्रिया

Guiding Hypothesis

अनुसंधान परिकल्पना

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया
माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान
शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



चरण 1:
जड़ी-बूटी विज्ञान
आयुर्वेद का जीर्णोद्धार एवं
औषधीय अनुसंधान।



चरण 2:
जीवनी-शक्ति का मापन
मनुष्य की शारीरिक और
मानसिक ऊर्जा का आधुनिक
यंत्रों से परीक्षण।



चरण 3:
उच्चस्तरीय उपयोग
ऊर्जा का उपयोग व्यक्तित्व
निखारने और आध्यात्मिक
प्रगति में करना।

→ पोस्ट ग्रेजुएट और विशेषज्ञ स्तर के वैज्ञानिक इन शोध कार्यों में संलग्न।

स्तंभ 4: दीप यज्ञ - घर-घर अलख जगाने की प्रक्रिया

समस्या: पारंपरिक यज्ञ

- अत्यधिक खर्चीला।
- कर्मकांडों में अधिक समय।
- अश्रद्धावश या समयाभाव से जनसामान्य की कम भागीदारी।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन
के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा — सब
बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान
शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



युग-अनुरूप समाधान: दीप यज्ञ

- व्यापक, सुलभ, स्वल्प साधनों से संपन्न।
- हर मुहल्ले और गाँव में नव-जागरण का संदेश पहुँचाने में सक्षम।

दीप यज्ञ का वैज्ञानिक और सामाजिक फ्लोचार्ट

1. न्यूनतम सामग्री

हर याजक 1 थाली, 5 अगरबत्ती और 1 दीपक लाता है (शून्य खर्च)।

2. पूर्ण समानता

सभी वर्ग के नर-नारी पंक्तिबद्ध होकर बिना किसी भेद के बैठते हैं।

3. सामूहिक प्रक्रिया

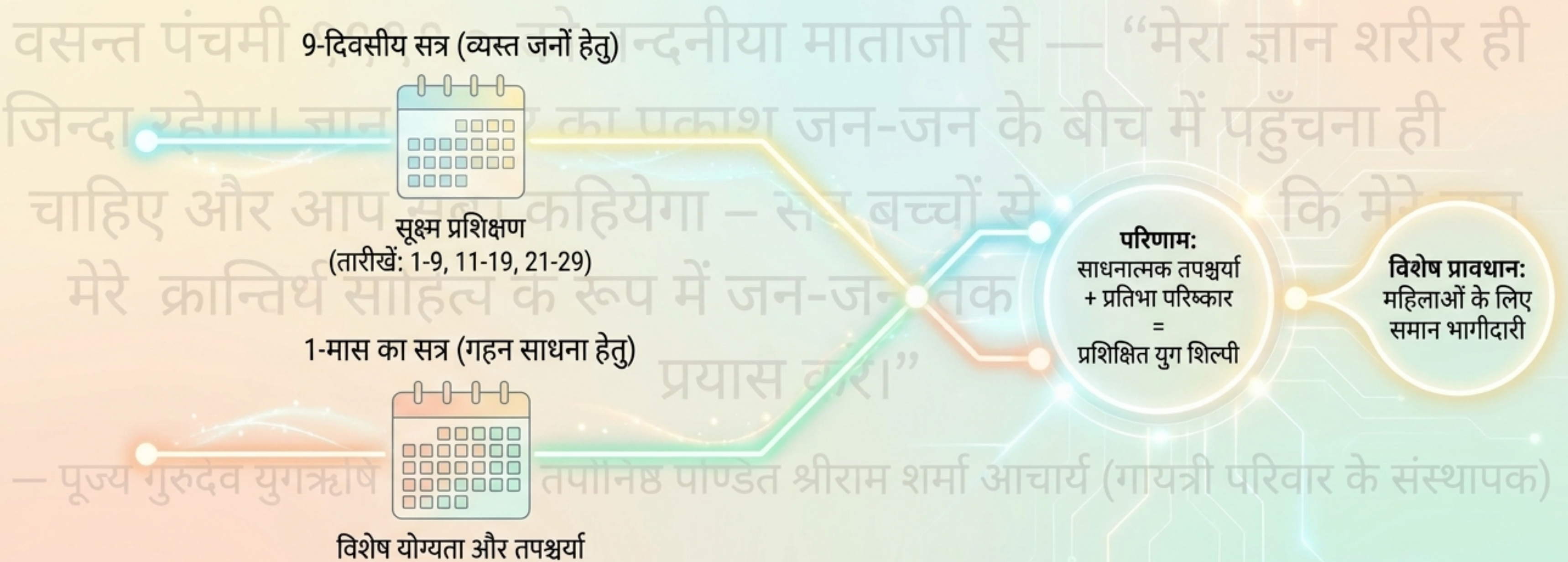
गायत्री मंत्रोच्चारण + प्रगतिशील विचारों का प्रवचन।

4. सामाजिक परिणाम

उपस्थित प्रतिभावान लोगों को मिलाकर एक 'प्रज्ञा मंडल' (सक्रिय सामाजिक इकाई) का निर्माण।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

प्रतिभा परिष्कार और युग शिल्पियों का उत्पादन: शिक्षण सत्र व्यवस्था



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्म साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

नारी जागरण - युग की माँग

वसन्त पंचमी

१९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



सिद्धांत

‘नर और नारी
एक समान’ - युग
रथ के दोनों पहिये।

व्यावहारिक पहल

स्थानीय महिलाओं
द्वारा 24,000 ‘महिला
दीप यज्ञों’ का स्वतंत्र
संचालन।

पुरुषों का कार्य केवल
उदारतापूर्ण सहयोग।



प्रमुख लक्ष्य:



- 5 वर्ष में महिलाओं की पूर्ण साक्षरता का लक्ष्य।



- खर्चीली शादियों का पूर्ण बहिष्कार।



[साहित्य
वितरण]

[दीप यज्ञ]

[शिक्षण सत्र]

[वानप्रस्थ]

[वैज्ञानिक
अध्यात्म]

जन जागरण

प्रतिभा परिष्कार

सृजन सैनिक तैयार

अंतिम लक्ष्य: 600 करोड़ मनुष्यों की विचार
क्रांति और 21वीं सदी का उज्ज्वल भविष्य।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।

ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और
आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

एक लाख लोकसेवियों के निर्माण का गणित

विशाल लक्ष्य: युग संधि (12 वर्ष) में 1 लाख प्रशिक्षित लोकसेवियों का निर्माण।

प्रक्रिया और कार्य-भार:

- एक शिक्षित व्यक्ति 10 अशिक्षितों को साक्षर बनाएगा।
- हर व्यक्ति समयदान और अंशदान देगा।
- दहेज-रहित विवाह एक सामान्य प्रथा बनेगी।



प्रेरणा: राई को पर्वत बनाने वाली महाकाल की शक्ति पर विश्वास।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

निष्कर्ष और आह्वान

ज्ञान गंगा को घर-घर पहुँचाने के लिए नए भगीरथों की आवश्यकता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से – “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

महायज्ञ में आपकी आहुति:

ध्वंस सरल है और सृजनकठिन। इस नव-सृजन में अपना 'समयदान' और 'संकल्प' दें।